प्राक्कथन

अध्ययन की भूमिका –

विश्व कवियों में महाकवि कालिदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी अद्वितीय काव्यनिधि द्वारा संस्कृत वाङ्मय को अत्यन्त समृद्धशाली स्वरूप प्रदान किया है। महामनीषी महर्षि अरविन्द ने प्राचीन भारतीय काव्य–साहित्य का गहन अनुशीलन कर वाल्मीकि–व्यास एवं कालिदास को उनकी कृतियों के आधार पर उन्हें प्राचीन भारतीय इतिहास की अन्तरात्मा का प्रतिनिधि तथा अपनी संस्कृति के प्राणतत्त्व का प्रतिष्ठाता सत्य ही स्वीकार किया है। वस्तुतः जिन महान् आदर्शों एवं मान्यताओं को अपनी सुदीर्घ साधना और अनुभव के आलोक में भारतीय संस्कृति ने प्रतिष्ठित किया, कवि–कुल– गुरु कालिदास के काव्य ग्रन्थों में उनकी नितान्त मञ्जुल एवं प्रभविष्णु व्यञ्जना अभिव्यक्त हुई है।

महाकवि कालिदास की कृतियों में काव्य कसौटी पर निष्कलुष प्राप्त होने वाले नाना तत्त्व समाहित हैं ही, साथ ही उनमें विविध स्थलों में वर्ण्य कथानक के साथ ही विशद् शास्त्रीय ज्ञान भी ओत–प्रोत है। कवि की अप्रतिम प्रतिभा मानव–जीवन के समस्त क्षेत्रों का व्यापक रूप से संस्पर्श करती हुई महान् भारत राष्ट्र की सर्वाङ्मयी बाँकी–झाँकी का दिग्दर्शन कराती है।

महाकवि की उत्कृष्ट काव्य कृतियों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं भौगोलिक विषयों से सम्बन्धित अगाध ज्ञान भण्डार समाहित है। सामान्यतया महाकवि कालिदास के कलात्मक एवं विचारात्मक पक्षों को लेकर भारत ही नहीं अपितु विश्व में अत्यधिक अनुसन्धान कार्य सम्पन्न हुए हैं, किन्तु कवि के अन्य शास्त्रीय विषयों से सम्बन्धित ज्ञान के पृष्ठों का अनावरण अद्यतन नहीं हुआ है। इनमें से उनका विशाल

राजव्यवस्थापरक ज्ञान भी अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अनुपेक्षणीय है, जिस पर सुरुचिपूर्वक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रायः महाकवि की कालजयी कृतियाँ–रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, राजव्यवस्थापरक तत्त्वों– राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था, राजत्व के सिद्धान्त, राजा एवं राज्य की आवश्यकता, उत्पत्ति, राजा के गुण, कर्म, योग्यता, अधिकार, वर्ण, शिक्षा, सप्ताङ्ग, विविध राज्य एवं राजाओं के विवरण के साथ–साथ शासन–व्यवस्था में सहायक मन्त्रिपरिषद, न्याय, वित्त, सैन्य व्यवस्था आदि के विस्तृत तात्त्विक एवं अमूल्य विवरणों से परिपूर्ण हैं।

महाकवि युगीन प्राचीन बृहत्तर भारत से वर्तमान विभाजित भारत सर्वथा परिवर्तित परिलक्षित होता है, जिसके निमित्त सामाजार्थिक प्रभावों की अपेक्षा राजनैतिक प्रभाव भी कम उत्तरदायी नहीं हैं। वह विशाल अखण्ड भारत आज विखण्डित होकर खण्डित दृष्टिगत होता है। इसके अतिरिक्त यह तथ्य भी विचारणीय है कि प्रत्येक कवि की कृतियों में प्रतिबिम्बित मानव– जीवन के विविध पक्षों पर उसके स्वयं के वैयक्तिक जीवन की विविध प्रवृत्तियों, परिस्थितियों का तो प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही तत्युगीन शासन अथवा समाज में व्याप्त विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं भौगोलिक स्थितियाँ भी उसके साहित्य को प्रभूत मात्रा में प्रभावित करती हैं अतः किसी भी कवि के ज्ञान पक्षों का व्यापक एवं समष्टि अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

शोध समस्या का निरूपण –

कोई भी महाकाव्य अपने युग का एक ऐसा दर्पण होता है, जिसमें तत्युगीन समाज का सम्पूर्ण चित्र प्रतिबिम्बित होता है। इसमें राजनीति, धर्मनीति, ज्ञान–विज्ञान, साहित्य एवं संस्कृति सभी का दिग्दर्शन होता है। प्राचीन मनीषियों ने धर्म को समाज का

आधार कहा है और राजनीति को धर्म का पर्याय। वस्तुतः समाज के किसी पक्ष की विवेचना राजनीति से रहित होकर करना अत्यन्त दुष्कर होता है। यहाँ तक कि कला एवं विज्ञान भी राजनीति का ही पोषण पाकर पुष्पित, पल्लवित एवं फलित होते हैं। इसकी सम्पन्नता अथवा विपन्नता में तत्युगीन राजनीति का स्वरूप अङ्कित रहता है।

महाकविप्रणीत रघुवंशम् में राजनीति की झलक देखी जा सकती है। कालिदास का मानवधर्म में ही विश्वास था। राजधर्म पर विचार करते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि राजा को उन्हें (धर्म के नियमों को) अवश्य ही लागू करना चाहिए। उनकी दृष्टि में धर्म ही उसकी राजनीति (अर्थ और काम) को निर्धारित करता है। कालिदास के अनुसार राजधर्म में निहित सामाजिक व्यवस्था की देख–रेख राज्य का हित साधन है, क्योंकि संसार के प्रशासन का जुआ स्वयं सृष्टिकर्त्ता ने राजा के कन्धों पर रखा है। राजा ही सत्य एवं धर्म का प्रवर्तक है, राजा ही कुलीनोचित कुलाचार का प्रवर्तक है, राजा ही प्रजा का माता–पिता है और प्रजा का हित साधक है। कालिदास की दृष्टि में यदि राजा में किसी भी प्रकार का दोष या अभाव होता था तो उसके लिए राजा को ही दोषी माना जाता था। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि महाकवि कालिदास राजा एवं राज्य के मध्य भेद को स्वीकार नहीं करते हैं।

महाकवि कालिदास राज्य कार्यों में सहायक मन्त्रि परिषद् का भी उल्लेख करते हैं तथा शासन तन्त्र के महत्वपूर्ण अंग के रूप में उसका निरूपण करते हैं। इसके साथ ही वह यह भी सूचित करते हैं कि वाइसरायों (युवराजों– प्रान्तीय शासन अधिकारी–राजपुत्रों) की सहायता के लिए भी मन्त्रिपरिषदों का अस्तित्व था। ऐसा लगता है कि अमात्य परिषद् अथवा मन्त्रिपरिषद् से नीति सम्बन्धी प्रत्येक महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर मन्त्रणा की जाती थी।

महाकवि कालिदास संस्कृति साहित्य के ही नहीं, वरन् विश्व के श्रेष्ठ कवियों में अग्रगण्य है, उनके संस्कृत साहित्य सागर में अवगाहन करने वाले प्रत्येक विद्वान का

अभिमत है कि वे मूलतः श्रृंगार एवं प्रेम के कवि हैं। अधिकांश विद्वानों ने कवि की रचना प्रक्रिया, शैली, शब्द–योजना, छन्द, अलङ्कार, भाव व्यञ्जना पर विवेचन किया है अथवा प्राकृतिक सौन्दर्य, श्रृंगार एवं प्रेम की विभिन्न स्थितियों एवं मनोदशाओं के वर्णन में कवि ने जो श्रेष्ठता प्राप्त की है, उसका आकलन किया है। कतिपय विद्वानों ने कवि की कृतियों के आधार पर भूगोल एवं इतिहास पर भी प्रकाश डाला है, जो अपने आप में पूर्ण नहीं कहा जा सकता है, तथा ऐसे साहित्य का नितान्त अभाव है, जो कवि की राजव्यवस्थापरक सिद्धान्तों का मूल्यांकन करता हो। चूँकि अध्ययन विषय का प्रमुख उद्देश्य शासन व्यवस्था की एक महत्त्वपूर्ण इकाई राजव्यवस्था पर है, जो तत्युगीन समाज में प्रशासनिक स्थिति का निर्धारण करती है, अतः इसके प्रति महाकवि की कृतियों में प्रकीर्ण जानकारियों के प्रति लालसा होना स्वाभाविक है और वही इस शोध विषय की परिकल्पना का आधार भी बनता है।

शोध–सर्वेक्षण –

महाकवि कालिदास की कृतियों में प्रकीर्ण बहुविध एवं अहुआयामी तत्त्वों का अध्ययन सामान्यतया कलात्मक एवं विचारात्मक पक्षों को लेकर भारत ही नहीं, अपितु विश्व में भी हुए हैं, उनमें उपाध्याय, डॉ० भगवत् शरण–कालिदास का भारत, कालिदास और उनका युग, तिवारी, रमाशङ्कर– महाकवि कालिदास, द्विवेदी महावीर प्रसाद–कालिदास की निरंकुशता, दीक्षित, डॉ० जगदीश–कालिदास के काव्य, वर्मा डॉ० (श्रीमती) गायत्री–कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति, डॉ० पाण्डेय, श्यामलाल– भारतीय राजशास्त्र के प्रणेता, डॉ० अग्रवाल, वासुदेव शरण–मेघदूत एक अध्ययन, महर्षि अरविन्द–कालिदास, भावे, एस०एस०–कालिदास द नेशनल पोएट ऑफ इण्डिया, चटर्जी, एस०एस०–कालिदास ऐज पोएट्री एण्ड माइण्ड, चकलादार, एच०सी०–ज्योग्राफी ऑफ कालिदास, उपाध्याय, वी०एस०–इण्डिया इन कालिदास, सोशल

इण्डिया डिपिक्टेड बाई कालिदास, मिराशी, वी०वी०– कालिदास, पाण्डेय, राजबली–कालिदास, चौधरी, जयकृष्ण–कालिदास, झाला, जे०सी०–कालिदास ए स्टडी, शास्त्री, के०एस०आर०एस०–कालिदास, चट्टोपाध्याय, क्षेत्रेश चन्द्र– द डेट ऑफ कालिदास, गरडे, डी०के०–द सोशल एण्ड पॉलिटिकल थॉट ऑफ कालिदास, म्योर, जे०–ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स ऑन द ओरिजिन ऐण्ड हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन पीपुल आदि प्रमुख हैं।

उक्त पुस्तकों एवं लेखों से महाकवि कालिदास की कृतियों में प्रतिपादित भारतीय जीवन पर न्यूनाधिक प्रकाश पड़ता है, अधिकाँशतया इन अध्ययनों का आधार मूलतः श्रृङ्गारिक एवं प्रेमपरक हैं, किन्तु महाकवि की तीक्ष्ण राजनैतिक दृष्टि द्वारा प्रस्तावित राजनीतिक व्यवस्था के गवेष्णात्मक अध्ययन की आवश्यकता अद्यतन बनी हुई है, क्योंकि महाकवि की कृतियों में राजव्यवस्था विषयक अनिवार्य तत्त्वों का प्रकीर्णन मिलता है। अतः महाकाव्यों के वर्ण्य विषयों में राजव्यवस्थापरक दृष्टिकोण का निदर्शन सर्वथा नवीन एवं मौलिक है तथा अद्यतन कोई स्वतन्त्र कार्य नहीं किया गया है। इन सब कारणों से मैंने "महाकवि कालिदास की कृतियों में प्रतिबिम्बित राजव्यवस्था" विषय शोध हेतु चयन किया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य –

प्रस्तावित शोध विषय में प्रधानतया महाकवि कालिदास की कृतियों में प्रकीर्ण राजव्यवस्था सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करना है। इनमें महाकवि द्वारा वर्णित राजा एवं राज्य की आवश्यकता, राजत्त्व के सिद्धान्त, उत्पत्ति, राजा के गुण, शिक्षा, योग्यता, वर्ण, अधिकार, कर्त्तव्य सप्ताङ्ग, विविध राजा एवं राज्य मन्त्रिपरिषद, मन्त्रियों की योग्यता, वेतन आदि का गहन एवं विशद् विवेचन मूल स्रोतों एवं साक्ष्यों द्वारा प्रोद्भाषित किया गया है। अग्रेतर महाकवि द्वारा वर्णित अन्य प्रशासनिक व्यवस्थाओं, यथा– राजाओं के उत्तराधिकार के नियमों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं का केन्द्रीय, प्रान्तीय एवं स्थानीय स्तर पर विभाजन,

सैन्य व्यवस्था तथा न्याय व्यवस्था के विविध पहलुओं को मौलिक स्रोतों की पृष्ठभूमि में न केवल मूल्यांङ्कित किया गया है, अपितु यह भी उद्घाटित एवं समीक्षित करने का सार्थक प्रयास किया गया है कि महाकवि द्वारा प्रणीत कृतियों में वर्णित अन्यान्य तत्त्व राजव्यवस्था की किन मर्यादाओं एवं सीमाओं के वशीभूत हैं और यह किस सीमा तक तत्युगीन सामाजिक परिस्थितियों के आलोक में आधुनिक भारतीय राजव्यवस्था की सामान्य जनमानस के विचार एवं संक्रमित परिस्थिति को प्रभावित करने और उसे रचनात्मक राह दिखाने में सहायक सिद्ध होगा।

शोध अध्ययन का महत्त्व –

प्रस्तावित शोध कार्य के माध्यम से प्राचीन तथा आधुनिक राजनीतिक परिस्थतियों के सन्दर्भ में आदर्श राजव्यवस्था के प्रति आदर– अनादर, सफलता, स्थिति तथा व्यवस्था में आये दृष्टिकोणों का अध्ययन करने में सहायता प्राप्त होगी। युग–युगीन राजव्यवस्था विषयक स्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर कालक्रमागत राजनीतिक विचारों में आए परिवर्तनों के मूल कारणों को समझने की तार्किक एवं सुबोधगम्य सामग्री उपलब्ध होगी। वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में आ रहे ह्रास के प्रति दृष्टिकोण के स्वरूप और तद्जन्य प्रभाव के अध्ययन का अवसर प्राप्त होगा तथा नई पीढ़ी के अनुसन्धित्सुओं को शोध कार्यों के लिए अध्ययन का अभिनव क्षितिज दृष्टिगोचर होगा और सामान्य जिज्ञासु जनता को भी प्राचीन व्यवस्था में महाकवि द्वारा प्रदत्त राजनीतिक विचारों को जानने समझने तथा वर्तमान सन्दर्भों में उसकी आवश्यकताओं एवं प्रासंगिकता का अनुभव होगा।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभक्त है –

अध्याय प्रथम– **प्रस्तावना** के अन्तर्गत कालिदास एवं उनकी कृतियों का परिचय, कालावधि, वर्ण्य–विषय, ऐतिहासिक एवं राजनीतिक महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है।

अध्याय द्वितीय– **राजत्व का सिद्धान्त एवं राजा की स्थिति** के अन्तर्गत राजा एवं राज्य की आवश्यकता, उत्पत्ति, सिद्धान्त, उत्तराधिकार, राजा की योग्यता, वर्ण, शिक्षा, राज्याभिषेक, सुरक्षा, समय सारिणी, नियन्त्रण, राजा की शक्तियाँ एवं कार्य, राजा का महत्त्व, राज्य के सप्ताङ्ग, षाड्गुण्य, शक्तित्रय, उपायचतुष्ट्य आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जो किसी भी राजव्यवस्था के मेरुदण्ड माने गए हैं।

अध्याय तृतीय– **कालिदास की कृतियों में वर्णित विभिन्न राज्य एवं राजा** में कोशल–उत्तर एवं दक्षिण, मगध, अङ्ग, सह्य, बंग, उत्कल, कलिङ्ग, कामरूप, पाण्ड्य, अपरान्त, केरल, विदर्भ, अनूप, अवन्ति, शूरसेन, दशार्ण, जनस्थान, सिन्धु, केकय, कारापथ, ब्रह्मावर्त, निषध।

आदिम जातियों के प्रदेश– किरात, किन्नर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, विद्याधर, नाग, पुलिन्द, बनेचर, निषाद।

शासन एवं अर्थ केन्द्र नगर तथा तीर्थस्थान– तक्षशिला, पुष्कलावती, हस्तिनापुर, मधूमघ्न, मथुरा, अयोध्या (साकेत), शरावती, प्रतिष्ठान, काशी, मिथिला, विदेह, नगरी, पुष्पपुर, प्राग्ज्योतिषपुर, माहिष्मती, उज्जयिनी, दशपुर, विदिशा, कुशावती, कुण्डिनपुर, उरगपुर, अलका, औषधि प्रस्थ आदि राज्यों एवं राजाओं का उल्लेख किया गया है।

अध्याय चतुर्थ– **प्रशासनिक व्यवस्था** के अन्तर्गत विकास, प्रशासन के मुख्य विभाग, अधिकारी एवं केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकारी/ कर्मचारी, स्थानीय प्रशासन, मन्त्रि–परिषद– मन्त्रियों की संख्या, योग्यता, मन्त्रणा प्रणाली समाविष्ट है।

अध्याय पञ्चम– **न्याय व्यवस्था** के अन्तर्गत न्यायपालिका, न्यायिक प्रक्रिया, विभिन्न मुकदद्में, अपराध एवं दण्ड, दण्ड के प्रकार आदि का समावेश किया गया है।

अध्याय षष्ठ– **प्रतिरक्षा व्यवस्था** में प्रतिरक्षा सम्बन्धी विचार, दुर्ग, सेना, सैनिक–योग्यता एवं गुण शस्त्रास्त्र, युद्ध संचालन पद्धति, युद्ध सम्बन्धी धार्मिक व्यवस्थाएं, सन्धियाँ, दूत पद्धति एवं गुप्तचर व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय सप्तम्– **वित्तीय प्रशासन व्यवस्था** में कालिदास द्वारा प्रतिपादित, भू– राजस्व के सिद्धान्त, राजस्व के प्रकार एवं वसूली, आय–व्यय के स्रोत, वित्त विभाग संगठन एवं कर्मचारी–कर, उपहार, जुर्माना। व्यापार–वाणिज्य, आन्तरिक एवं बाह्य। व्यापारिक मार्ग– जल एवं स्थल का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय अष्टम् – **उपसंहार** के अन्तर्गत सम्पूर्ण प्रतिपाद्य विषय का पुनरावलोकन प्रस्तुत किया गया है।